

साधिक तत्त्वविहारे पद ॥ २ ॥ हिमं सख्यगगाकमिह
नवोन्मेषपादक ॥ कृमृदाकृमिनप्ररुमीगननप्र
लवामगन ॥ ३ ॥ प्रत्ययाहिनिहृदि विधानप्र
कृकनं ॥ कनतासुनसर्वदिगं प्रनमं प्रनमं प्रनमं कनन
विमिवकुगुभाकविनामनिष्ठो हिममाधममादिदिनप्र
धनवृद्धिहारुमं संहारिना मृगवृद्धयमं प्रजयनहं ॥ ४ ॥



2237

ॐ संयिं यं संमां द्रवं दं ॥ इति नं गुं नं संयनं ॥ ध्या ॥ नागाशस्त्ररत्न
 त्रिगाल ८५ ॥ हलसि त्रमकु तकि त्रिमा ज राशि तव सध इम
 ॥ साहिय वडा सत्व यत्तमं ॥ त्रय दूम यदा ॥ १२ ॥ गम रत्न निवद
 ॥ विधि कै (थ) गत द ह धन २ वा त्रि तुरु त्रय या निगु के गत
 ॥ इम २ साहिय वडा सत्व ये त्रमं ॥ त्रय दूम यदा ॥ ध्या ॥ नागाशस्त्र
 वन कृ त्रिमा त्रिज न राय न वि नयु २ नाव यि व द सत्व यत्तमं ॥ नव
 ॥ त्रिमा सह सुकि त्रम द्वा दह सा ह सव त्रि २ व द विधि ॥ ल वन त्रय न न

ता वा ॥

नागधनाग्री ॥ अथ वा कुरु ॥ ॥ इव मनूष्यास्तु न न कच न ध ॥ प्र नि ह न ड न ड ॥ ग
 उ मन ध लोक गत्वं मा म ग न धं न कुरु पा ला कुरु का न धं ॥ १ ॥ संसा ना द
 म ध निम नं कं ग म हा नि स मा हि त रं नं ॥ मा म व धी न य मा वि न वं त ॥ २ ॥ दि न
 हा रु प नो मि रु व नं ॥ २ ॥ इ म्मा नि मि ना प इ त नं ॥ म न ध म हा रु य वि क न म य
 ॥ पा ल य रु ग व न व ला क य मां या व द की विं या मि न वि ष मां ॥ कुरु म नू षी य
 रु ध म ऊ र्ध्व ॥ रु त म रु न प्र नि स रु रं ॥ ना ध म या कुरु पा प म (गं) ॥ ना ग य सं षु दि
 का यि क दा ष ॥ ४ ॥ ये डी वि त स का न नि मि रुं ला का नि यं रु ति न म स रुं ॥

2837

ममोक्तं त्वन्यापि... ॥ अथ विष्णुः ॥
नमहि तं स... ॥ अथ विष्णुः ॥
सुमहयनाथ... ॥ अथ विष्णुः ॥
दुःखगतीनां ॥ अथ विष्णुः ॥
नममो भगवते ॥ अथ विष्णुः ॥
नमस्तस्मिन् ॥ अथ विष्णुः ॥
संवत्सराय ॥ अथ विष्णुः ॥

बालिपत्रवली

पतिसिंहा. त्वार्थतनामृतन॥ ५॥ ॥ नागगंधानरहेनवी॥ वा. कद्रु॥ चतुःप्रवृत्त
पलपानलाह. हीमविनय. शितयस्वरूप॥ समीनवीजा. रुवविश्वरूप
कालिप्रमथ. प्रमथामिनिथ॥ ५॥ १॥ कालीकनाली. कनवालधानी.
प्रतासनस्का मधुपायद्रुक्ता॥ वामनरुटं. सुटिकंदधाना. मामहहासा.
बहु. कालिकासा॥ २॥ वृष्णाचूतभा. घमनेनपास्या. न्यासानिलासा. सुन
नाजसंधा॥ ३॥ गुग्गुलुग. रुसिताखिलाभा. पालाविमाला. रुनभाई

लाभा॥ ३॥ विद्युत्तनाला. लनसहृहीमा. गवहसिंघ. एनिपार्मत्वीतिः॥
हंसानशुक. किं वगन्तुलाप. रुसिंहमूषा. कहितासनातिः॥ ४॥ सपित्त
मीमा. रुनिधानवर्ष. रुद्रतपस्य. गनरुन्मतिथ्या॥ कालीमपूज. छनद्रु
वेद्य. गुहार्कसिंहा. हिहिताः मृतासो॥ ५॥ २॥ नागजलवर्ष॥ गालत्रुन्म
०॥ ॥ शीतलयासनीयास. रुद्राहनात्मजंप्रताः॥ मित्राविजाविवाहानि.
हंतासनास्मितासना॥ १॥ वैश्ववर्गप्रथमजा. महात्मन्मपाश्रय॥ हिमा
न

श्रीनरयाम

गुहिमलेलाहं हंमालंका न हृषितां ॥ २ ॥ विंद प्रकल्पिता गंधं नानां सा
 नां हंवां वं ॥ गुलाग्रप्रयनिस्पृक्तं उवर्तयता तुंवी ॥ ३ ॥ पोशाकं लेखं
 धा म्हा वि म मयी हंतं सर्वं का ॥ हे गहि वि विना म्हां कि प्रकल्पं रूपं मा
 लिको ॥ ४ ॥ पेंवान नीवु उर्वका शंकी हे नव वा ध्मवी ॥ माधवी कालव
 दना चामुआ मिखि वाहनः ॥ ५ ॥ हि मा ह रुंदी पिम्वी न रुके य सुम
 नितां ॥ वैनि प्रकल्पं च ॥ पादपं न मनान म्हा ॥ ६ ॥ पोना वा ना नल का

न गेत्रा धय पा धुनः ॥ सांगान की न्द्र तिथि म्हा ल श्री स मर्वनां ॥ ७ ॥
 म्हा ल श्री मया जी हा म म्हा हि ध धी य धी ॥ सरु ग लां हान कन राख
 नाय न्मा दितः ॥ ८ ॥ ॥ ना ग हे न वी ॥ ताल प्रक ताल ॥ दिन ना ऊप सा
 ह्म मा फ वन गऊ ना ऊ म्खं सुन ना ऊ सखं ॥ गल ना य क वा म सु ना ल
 हवं प्रम मा मि वि ना य क वि ध्न प ति ॥ १ ॥ हि ऊ ना ऊ क लां कि न रुं न
 ट ऊप स ड्क मूल कृण न कनं ॥ विहि ना सन म्हा वि क ना ऊ म्खा न लि